अमर उजाला

नई दिल्ली । बृहस्पतिवार, 28 फरवरी 2019

# प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

सभी राष्ट्रों को न्याय का अनुपालन करना चाहिए और सबके साथ शांति बनाए रखनी चाहिए...

- जॉर्ज वाशिंगटन

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

**जिस दिन पाकिस्तान ने भारतीय वायुसीमा में घुसने की कोशिश की, उसी दिन पाक प्रधानमंत्री ने भारत के सामने वार्ता की पेशकश भी की! इसके साथ-साथ उसके झूठ को भी जोड़ लें, तो साफ है कि अलग-थलग पड़ने के बावजूद उसकी फितरत नहीं बदल रही।**

## पाकिस्तान की फितरत

बालाकोट में जैश के आतंकी ठिकाने को ध्वस्त करने की प्रतिक्रिया में अगली सुबह पाकिस्तान ने भारतीय वायुसीमा में घुसने की जो दुस्साहसी कोशिश की, उसकी आशंका तो थी ही, भारतीय वायुसेना ने उसका जैसा मुंहतोड़ जवाब दिया, वह भी उम्मीदों के अनुरूप ही था। विदेश मंत्रालय द्वारा की गई प्रेस कॉन्फ्रेंस में-जिसमें पाकिस्तान को संदेश देने के लिए वायुसेना के एयर वाइस मार्शल की भी बेहद अर्थपूर्ण उपस्थिति थी-प्रवक्ता ने बताया कि पाक वायुसेना ने भारतीय सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की थी, जिसे नाकाम करते हुए एक एफ-16 विमान को मार गिराया गया। हालांकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पाक युद्धक विमानों को खदेड़ने की प्रक्रिया में हमने एक मिग-21 खोया, जिसके पायलट को पाकिस्तान अपने कब्जे में बता रहा है। उस पायलट को सकुशल वापस लाने की कोशिश में हमें पूरा जोर लगा देना चाहिए। इस सिलसिले में सरकार ने नई दिल्ली स्थित पाक उप-उच्चायुक्त को तलब भी किया। यह भी उम्मीद करनी चाहिए कि घोषित युद्ध न होने के बावजूद पाकिस्तान जिनेवा समझौते का पालन करते हुए हमारे पायलट के साथ बर्ताव में मानवीयता का परिचय देगा। पाक प्रधानमंत्री इमरान खान ने भारतीय वायुसीमा में घुसने की कथित कोशिश को जवाबी कार्रवाई बताते हुए जिस तरह अपने देशवासियों को संबोधित किया, और भारत के सामने वार्ता की पेशकश की, वह आंखों में धूल झोंकने की पाकिस्तान की एक और कोशिश ही ज्यादा लगती है। इमरान खान की इस 'पेशकश' की वजह कब्जे में किए गए भारतीय पायलट के बहाने भारत को ब्लैकमेल करने की मंशा भी हो सकती है या फिर यह वैश्विक दबाव के आगे उसके झुकने का सुबूत भी हो सकता है, क्योंकि भारत की कार्रवाई के बावजूद चीन समेत किसी देश ने पाकिस्तान का समर्थन नहीं किया है, बल्कि चीन में तीन देशों के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त बयान जारी कर आतंकवाद की निंदा की है। वहां चीन और रूस के विदेश मंत्रियों की मौजूदगी में सुषमा स्वराज ने भारतीय कार्रवाई का औचित्य ठहराते हुए कहा कि भारत ने पाक के आतंकी ठिकाने को निशाना बनाया। लिहाजा वैश्विक स्तर पर अलग-थलग पड़ चुके पाकिस्तान को अब आतंकवाद को प्रश्रय देना बंद करने के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए, अन्यथा भारत हर मोर्चे पर उसे माकूल जवाब देने के लिए सक्षम और तैयार है।

## शांति और युद्ध के बीच

**भारत को पाकिस्तान पर इतना दबाव बनाकर रखना चाहिए कि उसे याद रहे कि अगर उसने आतंकवाद को प्रश्रय देना जारी रखा, तो उसकी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो सकती है।**

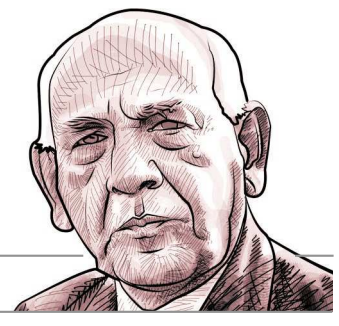

**प्रशांत दीक्षित,** सेवानिवृत्त एयर कोमोडोर

जैश-ए-मोहम्मद के खैबर फख्तुनख्वा स्थित कैंप में भारतीय वायुसेना के हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव काफी गहरा गया है। इन पंक्तियों को लिखते वक्त तक पाकिस्तान ने दावा किया है कि उसने भारतीय वायु सेना के दो विमान गिराए हैं, लेकिन हमारी सरकार ने इससे इनकार करते हुए कहा है कि हमने पाकिस्तान के हवाई हमले की कोशिश को नाकाम किया है और पाकिस्तान के एक लड़ाकू विमान को गिरा दिया है। इस प्रक्रिया में हमने एक विमान खोया है और हमारा एक पायलट लापता है, जिसके बारे में पाकिस्तान दावा कर रहा है कि वह उसके कब्जे में है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हम पाकिस्तानी दावे की तस्दीक करेंगे। स्पष्ट है कि पाकिस्तान का बढ़-चढ़कर दावा करना उसके दुष्प्रचार की रणनीति का हिस्सा है। इन सबके बावजूद तथ्य यह है कि दोनों तरफ सैन्य गतिविधियां बढ़ गई हैं और कुछ समय के लिए आठ हवाई अड्डों पर यात्री विमानों के संचालन को भी रोकने का आदेश दिया गया था, जिसे बाद में वापस ले लिया गया।

भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने विदेश यात्रा के दौरान रूस और चीन के साथ मिलकर एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया है, जिसमें आतंकवाद की पूरी निंदा की गई है। मेरा मानना है कि यह पाकिस्तान के लिए एक सख्त संदेश है। जाहिर है, इस तनातनी के माहौल में दोनों देशों के बीच एक परिपक्व व्यवहार की आवश्यकता है। बालाकोट में आतंकी शिविर पर हवाई हमले के बाद विदेश सचिव ने जो बयान दिया था, उसमें यह खुलासा कर दिया गया था कि यह एक गैर-सैनिक अभियान है और इस आतंकवाद विरोधी अभियान के जरिये जैश-ए मोहम्मद के कैंप को तबाह कर दिया गया है। संभवतः भारत सरकार सिर्फ पाकिस्तान को ही नहीं, पूरे विश्व को यह संदेश देना चाह रही थी कि भारत का उद्देश्य आतंकवादी संगठनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना था, जिससे भारत पर समय-समय पर होने वाले आतंकी हमलों पर सफलतापूर्वक अंकुश लगाया जा सके। अब यह देखना महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान और पाकिस्तानी सेना इसको कैसे देखती है। यहां एक बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि हमने जो आतंकी शिविर पर हवाई हमले किए वह पाकिस्तान की धरती पर था और खैबर पख्तुनख्वा प्रधानमंत्री इमरान खान का इलाका है। इसका एक असर यह हो सकता है कि इसे उनके लिए एक व्यक्तिगत हमला समझा जाए, और पाकिस्तानी जनता और पाकिस्तान की सेना उन्हें उकसाने में सफलता पा ले। हालांकि अभी तक पाकिस्तान ने यह स्वीकार नहीं किया है कि भारतीय वायु सेना की कार्रवाई उनके लिए कोई खासियत रखती है। उनके दृष्टिकोण से उस कार्रवाई में न तो कोई हताहत हुआ है और न ही कोई नुकसान पहुंचा है।

इन सब बातों के द्वंद्व में इस पूरे प्रकरण की दिशा किस तरफ जाएगी, यह महत्वपूर्ण है। मेरा मानना है कि भारी तनाव की यह स्थिति अभी थोड़े दिनों तक ही चलेगी। हवाई अड्डों को बंद करने का जो फैसला लिया गया था, वह भी सिर्फ एहतियात के तौर पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से लिया गया निर्णय था। यह निश्चित है कि शीघ्र ही अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अपना असर दिखाएगी और दोनों देशों पर दबाव डाला जाएगा कि सैनिकों से जुड़े किसी अभियान को ज्यादा तूल न दिया जाए, और दोनों देशों की वायु सेनाएं अपने-अपने बेस में चली जाएं। इन सबके बीच हालांकि, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने फिर से यह कहा है कि हम दोनों देश एक दूसरे से बातचीत का रास्ता निकालें, क्योंकि इसी में हम सबकी भलाई है। इमरान के इस बयान से भारत को सहमत होने में कोई अड़चन नहीं होनी चाहिए। जैश-ए मोहम्मद के ठिकानों पर हमला करके और जैसे कि कहा जाता है, उसे तबाह करके भारत ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है। साथ ही यह भी आशा है कि न सिर्फ पाकिस्तान को, बल्कि पूरी दुनिया को यह संदेश चला गया है कि आतंकवाद के मामले में भारतीय विचारधारा में और संसार के और देशों की विचारधारा में कोई विरोधाभास नहीं है। इसलिए इमरान खान के इशारों को ठीक से समझ के हमें सकारात्मक दिशा में कदम उठाने चाहिए।

रही बात अपने लापता पायलट को वापस लाने की, तो अगर वास्तव में वह पाकिस्तान के कब्जे में हैं, तो इस मामले में हमें पाकिस्तान को कूटनीतिक संदेश भेजने की आवश्यकता है कि वह उस पायलट को जितनी जल्दी हो सके, छोड़ दे, ताकि वह सुरक्षित वतन लौट सकें। इसके अलावा भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान पर इतना दबाव बनाकर रखना चाहिए कि उसे याद रहे कि अगर उसने आतंकवाद को प्रश्रय देना जारी रखा, तो उसकी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे अलग-थलग रखना बेहद जरूरी है।

भारत को पाकिस्तान के साथ रिश्ते को एक नए दृष्टिकोण से देखना पड़ेगा। वर्तमान सरकार की इस नीति में पाकिस्तान से वार्तालाप नहीं हो सकता, जब तक कि उनकी तरफ से आतंकवाद पर अंकुश न लगाया जाए। मुझे लगता है कि हमें इस नीति पर पुनर्विचार करना पड़ेगा। साथ ही साथ कुछ पुराने मुद्दों को ठीक से समझने के तरीके निकालने पड़ेंगे। उदाहरण के लिए, कई वर्षों पहले पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति मुशर्रफ ने सुझाव दिया था कि नियंत्रण रेखा को ही दोनों देशों के बीच की सीमा मान ली जाए और आम जनता के बीच एक-दूसरे से मिलने की ढील दी जाए। अटल जी के जमाने में दोनों देशों के बीच शांति व सुलह के जो कदम उठाए गए थे, हमें उन्हीं नीतियों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।

इन सब प्रयत्नों के साथ हमें याद रखना पड़ेगा कि पाकिस्तान के भीतर अब भी ऐसी ताकतें हैं, जो भारत से गहरा रिश्ता बनाने में खलल पैदा करें। इस संदर्भ में हमें याद करना होगा कि जब भी दोनों देशों ने एक-दूसरे की ओर हाथ बढ़ाया है, तब ये ताकतें उभर के आईं और रास्ते में रुकावटें पैदा कीं। यह सिलसिला एक झटके में समाप्त हो जाए, यह शायद संभव नहीं है। इसलिए हमें संयम बरतना पड़ेगा और पाकिस्तान जो अपने देश में मुश्किलें झेल रहा है, उसमें उसकी मदद करनी पड़ेगी। सत्तर वर्ष का इतिहास एक दिन में बदला नहीं जा सकता, इसे दुरुस्त करने के लिए कदम उठाने होंगे।

अंतर्ध्वनि

>> इलाचंद्र जोशी

## अनंत सृष्टि की तरह कला भी आनंद का ही प्रकाश है

*कला का मूल उत्स आनंद है। आनंद प्रयोजनातीत है। सुंदर फूल देखने से हमें आनंद प्राप्त होता है। पर उससे हमारा कोई स्वार्थ या प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। प्रभा की उज्ज्वलता और संध्या की स्निग्धता देखकर चित्त को एक अपूर्व शांति प्राप्त होती है। पर उससे हमें कोई शिक्षा नहीं मिलती। न कोई सांसारिक लाभ ही होता है। कारण आनंद का भाव समस्त लौकिक शिक्षा तथा व्यवहार से अतीत है। उसमें कोई बहस नहीं चल सकती।*

*हमें आनंद क्यों मिलता है? इसका कोई कारण नहीं बताया जा सकता। वह केवल अनुभव ही किया जा सकता है। 'ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावै।' आनंद का भाव वाणी और मन की पहुंच के बिल्कुल अतीत है। 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।' पर नीति का संबंध मन के साथ है। मन बिना आलोचना के, आनंद के सहज भाव को ग्रहण नहीं करना चाहता। वह पोथी पढ़-पढ़कर 'पंडिताई' में मस्त रहता है। सहज प्रेम के 'ढाई अक्षर' से उसकी तृप्ति नहीं होती। वह कविता पढ़कर इस बात की खोज में लग जाता है कि इसमें अर्थनीति, राजनीति, राष्ट्रतत्व, भूतत्व, जीवतत्व अथवा और कोई तत्व हैं या नहीं। वह यह नहीं समझना चाहता कि इस कविता में आनंद का जो अमिश्रित रस है, उसके किसी भी तत्व का कोई मूल्य नहीं। पर जो लोग इस दुष्ट समालोचक मन को दमन करने में समर्थ होते हैं, वे कला के 'आनंदरूपमृतम्' का अनुभव कर लेते हैं।*

*विश्व की इस अनंत सृष्टि की तरह कला भी आनंद का ही प्रकाश है। उसके भीतर नीति, तत्व अथवा शिक्षा का स्थान नहीं। उसके अलौकिक मायाचक्र से हमारे हृदय की तंत्री आनंद की झंकार से बज उठती है। यही हमारे लिए परम लाभ है। उच्च अंग की कला के भीतर किसी अन्य तत्व की खोज करना सौंदर्य देवी के मंदिर को कलुषित करना है।*

*-दिवंगत हिंदी उपन्यासकार*

मंजिलें और भी हैं

>> हरसुख भाई डोबरिया

## घर को बना दिया परिंदों की पनाहगाह

मैं गुजरात के जूनागढ़ में रहता हूं। करीब उन्नीस साल पहले की घटना है। एक दुर्घटना की वजह से मेरी टांग में फ्रैक्चर आ गया था। नतीजा यह निकला कि मुझे लंबे वक्त तक घर में आराम करना पड़ा। इसी दौरान मेरा एक दोस्त मेरे लिए अपने खेतों से बाजरे की कुछ बालियां लेकर आया। मैंने इरादतन बाजरे के दाने अपनी बालकनी में बिखेर दिए। दाने देखकर वहां एक तोता आ गया। मैं रोज यही काम करने लगा। और हर दिन दाना चुगने वाले पक्षियों की संख्या बढ़ती गई। एक महीने के भीतर मेरे घर की बालकनी सैकड़ों पक्षियों का अड्डा बन गई।

बालकनी की जगह सीमित थी। वहां अब और ज्यादा पक्षी नहीं बैठ सकते थे। लेकिन मुझे तो इन पंख वाले मेहमानों की संख्या बढ़ानी थी। मैंने कुछ पाइपों की मदद से उनके लिए कई स्टैंड बनाए, और हर पाइप पर उनके खाने का पूरा इंतजाम किया। उन्नीस साल बीतने वाले हैं, मैं वह काम आज भी और ज्यादा अच्छे तरह से अंजाम दे रहा हूं। इस काम में मेरे साथ मेरे परिवार वालों का भी पूरा योगदान है। हर रोज हजारों पक्षियों की दावत का इंतजाम करने में उनका पूरा साथ रहता है।

**पक्षियों को मौसम की मार से बचाने के लिए मैंने बसेरों का भी निर्माण कराया है।**

मेरा पुराना वाला घर शहर के बीच में था। वहां जगह भी कम थी, सो पक्षियों की सेवा करना मेरे लिए वहां पर थोड़ा मुश्किल हो रहा था। मेरे पड़ोसियों को भी परिंदों की दावत से परेशानी होती थी।

हालांकि उन्होंने कभी इस बात की शिकायत नहीं की, मगर मुझे उनकी समस्या का अंदाजा था। यही सब सोचकर मैंने वहां से निकलकर किसी खुली जगह पर अपना ठिकाना बनाने का फैसला किया। सात साल पहले मैंने शहर से काफी दूर अपने पुश्तैनी मकान में रहना शुरू कर दिया। यहां मैंने पक्षियों के लिए कई एकड़ जमीन खाली छोड़ रखी है। उनका पेट भरने के लिए यहां हर किस्म का इंतजाम है।

यही नहीं, इस पनाहगाह में हर साल हजारों नए पक्षी जन्म लेते हैं। नन्हे परिंदों को यहां किसी प्रकार का खतरा नहीं होता है। वे यहां से तभी बाहर जाते हैं, जब उनके पंख उड़ने लायक हो जाते हैं। पक्षियों को मौसम की मार से बचाने के लिए मैंने बसेरों का भी निर्माण कराया है। कुदरती तरीकों से बनाए गए घोसलों को यहां रहने वाले परिंदों की विलासिता कहा जा सकता है। पक्षियों के संरक्षण के लिए काम करने वाले दूसरे लोगों को भी घोसले बनाना सिखाता हूं। मैं इच्छुक किसानों को बाजरे की इन खास बालियों के बीज भी बांटता हूं, ताकि वे भी मेरी तरह तोते और गौरैया जैसे पक्षियों के लिए काम कर सकें। वैसे भी मैं इस काम के सिवा नए-नए तरीकों से खेती करना पसंद करता हूं।

पक्षियों के प्रति प्रेम और उनके संरक्षण के लिए मुझे राष्ट्रपति सृष्टि सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। जबकि खेती के अनोखे प्रयोगों के लिए भी मुझे गुजरात सरकार द्वारा कृषि रत्न से नवाजा जा चुका है। मैं सिर्फ पांचवीं कक्षा पास हूं। मैं शुरू से ही अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ा हूं। मैं मानता हूं कि इन बेजुबान परिंदों के अनुग्रह का ही परिणाम है कि मैं अपनी जिंदगी में कुछ कर पाया। मैंने पक्षियों की सेवा की, जो कि मेरा फर्ज था। अब यह फर्ज मेरे परिवार की अगली पीढ़ी मेरे साथ निभा रही है।

*-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।*

## विज्ञान को मनुष्यता से जोड़ें

**विज्ञान विकास का ही नहीं, आज विकार का भी रास्ता तैयार कर रहा है। इसलिए विज्ञान को मनुष्यता के साथ जोड़कर देखना चाहिए। अपने हित में हम जिस गति से विज्ञान का दुरुपयोग कर रहे हैं, वह एक दिन हमारे लिए विघटनकारी साबित होगा।**

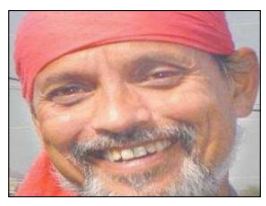

**अनिल प्रकाश जोशी**

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर हम यह भूल नहीं सकते कि नई सभ्यता और विकास की नींव विज्ञान ने ही रखी है। हमारे चारों तरफ की तमाम सुविधाएं, बेहतर जीवन सब में विज्ञान ने अहम भूमिका निभाई है। बेंजामिन फ्रेंकलिन का लाइटनिंग का अध्ययन हो या बैटरी की खोज या प्लास्टिक का आविष्कार, सब विज्ञान का ही परिणाम रहा। वर्ष 1700 में एडवर्ड जेनर ने वैक्सीन का प्रयोग तय किया और 1800 तक वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार कर लिया कि बीमारियों के पीछे बड़ा कारण बैक्टीरिया और वायरस हैं, और 1900 तक आते-आते कई तरह की एंटीबायोटिक तैयार हो गई, जिन्होंने हैजा और चेचक पर अंकुश लगाया। पिछले कई दशकों से सूचना प्रौद्यौगिकी का लाभ भी हम देख ही रहे हैं। इसने सूचना के आदान-प्रदान को जहां त्वरित किया, वहीं कागज के अत्यधिक उपयोग पर भी अंकुश लगा दिया।

लेकिन विज्ञान अब मात्र विकास का ही नहीं, बल्कि विकार का भी रास्ता तैयार कर रहा है। हम विज्ञान और विचार को जोड़ नहीं पाए, इसलिए कई तरह के वैज्ञानिक विकार हमारे बीच में हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि विज्ञान के जरिये हमने भोगवादी सभ्यता को ज्यादा बढ़ावा दिया। जैसे, सड़कों पर अंधाधुंध दौड़ती गाड़ियों को आवश्यकता नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये विलासिता का हिस्सा बन चुकी हैं। कार के नए से नए मॉडल इस सच्चाई को मिटा नहीं सकते कि देश-दुनिया के कई हिस्सों में आज भी आवाजाही संभव नहीं है। खाद्य सुरक्षा अपनाए जाने वाले तमाम रास्ते विज्ञान आधारित हैं, पर इससे एक विसंगति भी पनपी है। नई खोजें पुरानी चीजों को खत्म कर देती हैं। ट्रैक्टर के प्रचलन ने बैल की परंपरा समाप्त की है, खेतों की गूल (छोटी नहर) भूमिगत पंपों में बदल चुकी है और जंक फूड ने भोजन की आदत बदल दी है।

विज्ञान की जो सबसे विक्षिप्त खोज मनुष्य ने रची है, वे हथियार हैं। आत्मसुरक्षा के राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय बहाने के नाम पर हम पृथ्वी को बर्बाद करने से मात्र एक बटन दूर हैं, जिसके दबते ही विनाश हो जाएगा। राष्ट्रीय सुरक्षा की आड़ में बड़े व्यापार भी खड़े हो गए और इस ताकत ने वैसे देशों को महत्वपूर्ण बना दिया, वैचारिक विकास में जिनकी कोई बड़ी भूमिका नहीं है। यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि हमने विज्ञान से आचार-विचार को अलग-थलग कर दिया। हम उन्हीं खोजों की तरफ दौड़ पड़े, जिनसे तत्कालिक लाभ मिल सके। मोबाइल को सूचना क्रांति लाने का श्रेय भले दे दिया जाए, लेकिन यह मोबाइल ही है, जिसने कई मामलों में शून्य पैदा कर दिया है। घर में ही बैठे लोग आपसी बातचीत से हटकर मोबाइल में व्यस्त रहते है। बस, रेल कहीं भी देखें, तो यही दृश्य दिखाई देता है। हमारी पारस्परिक चर्चा पर विराम लग गया। पागलपन का यह दौर खत्म नहीं होने वाला, बल्कि हम इसके आदी बन चुके हैं। सुविधा के लिए जुटाए गए यंत्र और तंत्र ने शारीरिक श्रम छीन लिया है। अब भोजन तैयार करना, कपड़े धोना, साफ-सफाई सभी में यंत्रों के प्रवेश ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है, जो हमारे स्वास्थ्य पर बड़ी चोट करती है।

विज्ञान के साथ विचार की पहल आज की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। जीवन बेहतर रखने के वैज्ञानिक व तकनीकी सहारों का निश्चित रूप से उपयोग होना चाहिए, पर उस पर आश्रित होना भूल है। रोबोट सब काम कर सकता है, पर उसे मनुष्य का विकल्प नहीं समझा जा सकता। इसलिए विज्ञान को मनुष्यता के साथ जोड़कर देखना चाहिए। अपने हित में हम जिस गति से विज्ञान का दुरुपयोग कर रहे हैं, वह एक दिन विघटनकारी साबित होगा।

खुली खिड़की

## निर्माण से जुड़े श्रमिक

देश के विकास में विभिन्न तरह के हो रहे निर्माण कार्यों की भूमिका अहम है। एक आंकड़े के मुताबिक, देश में इस वक्त करीब सवा तीन करोड़ श्रमिक निर्माण कार्यों से जुड़े हैं, जिनमें 42 लाख श्रमिकों के साथ उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है।

निर्माण कार्यों से जुड़े श्रमिकों की संख्या | आंकड़े- 31 दिसंबर, 2018 तक के

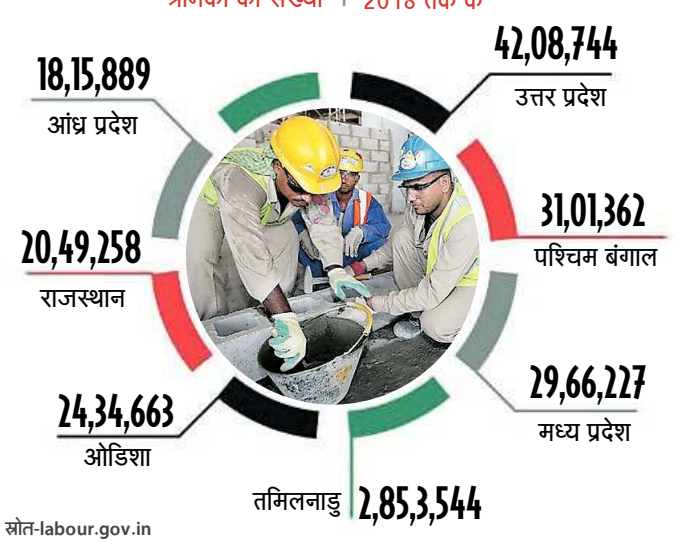


स्रोत-labour.gov.in

## हर जीव उपयोगी है

सत्संग

**एक** राजा ने एक दिन अपने दरबारियों से कहा कि जितने भी अनुपयोगी जीव-जंतु हैं, उनकी सूची बनाएं। दो दिन बाद दरबारियों ने कहा, महाराज, मक्खी और मकड़ी दो ऐसे जीव हैं, जिनका हमारे लिए कोई काम नहीं। राजा इन दो जीवों को खत्म करने की योजना बना ही रहा था कि पड़ोसी राजा ने हमला कर दिया। हमला इतना भीषण था कि राजा को जान बचाने के लिए भागना पड़ा। पड़ोसी राज्य के सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। भागते-भागते राजा जंगल में घुस गया। वह इतना थका हुआ था कि एक पेड़ के नीचे सो गया। थोड़ी ही देर में एक मक्खी उसकी नाक पर आकर बैठ गई। राजा की नींद खुल गई और उसे एहसास हुआ कि इस तरह खुले में सोना ठीक नहीं। वह वहां से उठा और एक गुफा में घुस गया। वह छिपने की अच्छी जगह थी, इसलिए वह उसी में रहने लगा। चूंकि गुफा में कोई रहता नहीं था, इसलिए एक मकड़ी ने उसके द्वार पर जाला बुन दिया। संयोग से पड़ोसी राज्य के सैनिक राजा को ढूंढ़ते हुए गुफा के पास पहुंच गए। पर मकड़ी का जाला देख उन्हें एहसास हो गया कि गुफा के अंदर कोई नहीं होगा। वे वहां से चले गए। राजा को एहसास हो गया कि वह जिन दो जीवों से छुटकारा पाना चाहता था, उन्होंने ही उसकी जान बचाई। महीनों बाद राजधानी में लौटने के बाद उसने दरबारियों से कहा कि मैं गलत था, कोई भी जीव अनुपयोगी नहीं होता।

**-संकलित**

हरियाली और रास्ता

## विक्रम, ड्राइवर और कचरा

***एक टैक्सी ड्राइवर की कहानी, जिसने सवारी को जीवन के बारे में व्यावहारिक व अनमोल सीख दी।***

*विक्रम को एक दिन दफ्तर से घर जाने में काफी देर हो गई। आम तौर पर वह बस से जाता था। पर उस दिन देर होने के कारण उसने सोचा, क्यों न टैक्सी से चला जाए। रास्ता लंबा था, तो विक्रम ने ड्राइवर से बातचीत शुरू कर दी। ड्राइवर गुरप्रीत अपने अनुभव विक्रम के साथ बांट रहा था कि तभी दुर्घटना होते-होते बची। गुरप्रीत सड़क के बीच में गाड़ी चला रहा था। बाईं तरफ कुछ गाड़ियां खड़ी थीं। सड़क पर कोई डिवाइडर नहीं था और सामने की तरफ से एक बड़ा-सा ट्रक आ रहा था। गुरप्रीत की स्पीड चालीस किलोमीटर प्रति घंटे की रही होगी। तभी बाईं तरफ की गाड़ी सड़क के बीचोबीच आ गई। गुरप्रीत के पास दो ही विकल्प थे, या तो वह जोर से ब्रेक लगाए, या फिर सड़क की दाईं तरफ चला जाए। गुरप्रीत ने पहला विकल्प लिया और जोर से ब्रेक लगा दिया। टैक्सी आवाज करती हुई सामने वाली गाड़ी से थोड़ी दूरी पर जाकर रुकी। सामने वाली गाड़ी से एक शख्स उतरकर आया और बोला, क्या दिखाई नहीं देता? गुरप्रीत मुस्कराते हुए बोला, माफ कीजिएगा, आप ठीक तो हैं न। उस शख्स ने घूरकर गुरप्रीत को देखा और वापस चला गया। विक्रम बोला, उसकी वजह से आज हमारी जान जाते-जाते बची और तुमने उसी से माफी मांगी। गुरप्रीत बोला, आपने कभी कचरा गाड़ी देखी है? विक्रम बोला, मतलब? गुरप्रीत बोला, कचरा गाड़ी में हर तरीके का कचरा भरा रहता है। वह जहां-जहां जाती है, अपना कचरा गिराती जाती है। कुछ लोग कचरा गाड़ी की तरह होते हैं, जिनके अंदर गुस्सा, तनाव, चिढ़, जलन आदि का कचरा भरा होता है। वे जहां-जहां जाते हैं, अपना कचरा दूसरों पर गिराते जाते हैं। हमें उनका कचरा उन्हीं के पास रहने देना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उस कचरे से मुक्ति पा सकें।*

जिंदगी बहुत छोटी है, हम चाहें, तो कचरा इकट्ठा कर लें या फिर खुशियां।